

कक्षा- आठवीं
विषय- हिन्दी
कविता- सूरदास के पद



तेरें लाल मेरौ माखन खायौ ।

दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि—ढ़िढोरि आपही आयौ ।

खोलि किवारि, पैठि मंदिर में, दूध—दही सब सखनि खवायौ ।

ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भूँईं मैं ढरकायौ ।

दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनै ढंग लायौ ।

सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ ।

सूरदास के पद

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?

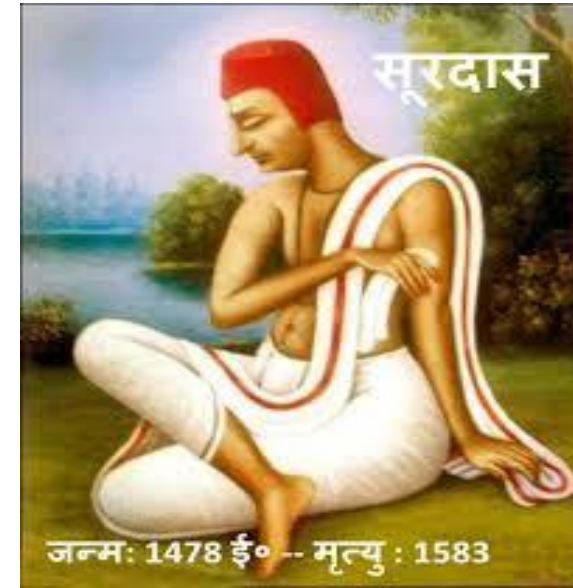
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी ।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, हवै है लाँबी—मोटी ।

काढ़त—गुहत न्हावत जैहै, नागिनी सी भुइँ लोटी ।

काँचौ दूध पियावत पचि—पचि, देति न माखन—रोटी ।

सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि—हलधर की जोटी ।



माखनचोर कान्हा



खोली किवारि, पैठि मंदिर में, दूध—दही सब
सखनि खवायौ ।

ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भूइँ मैं ढरकायौ ।

